दक्षिण पश्चिम रेलवे
हुब्बल्लि मंडल

प्रतिबिंब

अंक : 27 (त्रैमासिक गृह पत्रिका) अप्रैल–जून–2018 इटगि मंदिर

संरक्षक की कलम से.....

प्रतिबिंब के 27वां अंक आपको समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। हमारा सतत् प्रयास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम आप सभी को एक सकारात्मक माहौल प्रदान करें, जिसमें मंडल की गतिविधियों के साथ–साथ रेलकर्मियों के साहित्यिक रचनात्मक का पुट हो, ताकि शासकीय कामकाज में हिंदी के प्रयोग के प्रति रेलकर्मियों की रुचि निरंतर वृद्धि हो।

रेलवे बोर्ड के निदेशानुसार मंडल में भी कर्मचारियों की उत्पादकता और कार्य कौशल में सुधार और विकास करने के लिए "सक्षम" परियोजना प्रारंभ कर दिया गया है। इसमें कर्मचारियों को पांच दिवसीय गहन कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि प्रशिक्षित कर्मी बेहतर सेवा और सुविधाओं के लिए यात्रियों की बढ़ती अपेक्षाएं पूरी कर सकें। इस परियोजना के तहत राजभाषा कर्मियों के लिए जनवरी माह में पांच दिवसीय गहन कक्षाएं चलाई गईं, जिसमें कर्मचारियों को राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेशों के अलावा सरल अनुवाद करने पर जोर दिया गया।

हुब्बल्लि मंडल रेल कार्यालयों में सरकारी कामकाज में संघ की राजभाषा हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने और राजभाषा हिंदी को इसका उचित स्थान दिलाने के लिए लगातार प्रयासरत है। मंडल के बड़े रेलवे स्टेशनों पर गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग–प्रसार को स्वस्थ स्पर्धात्मक रूप से बढ़ाने हेतु बेलगावि स्टेशन में राजभाषा कार्यान्वयन क्षेत्र में सर्वोच्च कार्य निष्पादन करने वाले सदस्य कार्यालय को राजभाषा शील्ड और ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। इससे रेल कार्यालयों में हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा हुई है और कर्मचारी अपने दैनंदिन कामकाज में हिंदी का प्रयोग करने में रुचि ले रहे हैं।

मुझे यह सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि राजभाषा शाखा ने हिंदी पुस्तकालय में उपलब्ध सभी पुस्तकों का विधा वार अर्थात् (i) कुल पुस्तक वार (ii)उपन्यास वार (iii)कहानी वार और (iv) अन्य(इतर) वार कंप्यूटरीकरण कर दिया है और उसे मंडल की वेबसाइट पर अपलोड किया है, ताकि पाठक अपनी पसंद की किताबें सरल व सहजता से चुन सके। साथ ही विभागीय परीक्षाओं में राजभाषा नीति संबंधी पूछे जाने वाले प्रश्नों को प्रश्न पत्र सेट करने वाले अधिकारियों के सुलभ संदर्भ के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी तैयार कर अपलोड किया है।

इस पत्रिका के माध्यम से मंडल रेल कार्यालयों की गतिविधियों के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन के विविध पहलुओं और क्षेत्रीय एवं हिंदी भाषा में रचनात्मक कौशल को सामने लाने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार से संबंधित अपने महान दायित्व की पूर्ति में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए मंडल कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

सदैव की भांति पत्रिका पर आपके विचार सादर आमंत्रित हैं।

जय हिंद!

(राजेश मोहन)
मंडल रेल प्रबंधक, हुब्बल्लि

63वां रेल सप्ताहसमारोह

दिनांक 21.04.2018 को आयोजित 63वें रेल सप्ताह समारोह को संबोधित करते हुए श्री राजेश मोहन, मंडल रेल प्रबंधक.

अंतर मंडल नाटक प्रतियोगित-प्रथम स्थान, हुब्बल्लि मंडल

दिनांक 16–03–2018 को बेंगलूरु में आयोजित अंतरमंडल नाटक प्रतियोगिता में मंडल द्वारा मंचित नाटक "अल्लोंदु लोका" को सर्वश्रेष्ठ नाटक, निदेशक एवं अभिनेता के पुरस्कार प्राप्त हुए

हर तरफ खुदा है

धरती में खुदा है,
अम्बर पे खुदा है,
पंछियों की गूंज तू ;
नदियों में बसा है,
दुनिया का हर रूप तेरे रूप से जुड़ा है,
मेरे मौला! ये जिंदगी कब तुझसे हुई जुदा है?

धड़कनें चल रहीं तेरी कुदरत के सहारे,
सांसों की रूह भी हवाओं को पुकारे,
सुबह–शाम जैसे कई रूप हैं तुम्हारे,
सूरज की तपिश भी तेरी एक अदा है,
मेरे मौला! ये जिंदगी कब तुझसे हुई जुदा है?

पेड़ों की छांव में दो पल जो सो लिये,
चैन की नींद में खुद को डूबो लिये,
चंद लम्हों में ही कई सपनें पीरो लिये,
पेड़ों की छांव भी तेरी ही दुआ है,
मेरे मौला! ये जिंदगी कब तुझसे हुई जुदा है?

विनाश की राह को विकास कह गये,
नदियां हैं सूखी पड़ी सारे पानी बह गये,
महलों की भीड़ में सिर्फ चन्द पेड़ रह गये,
कौन दोषी इसका, किसकी ये खता है?
मेरे मौला! अब जिंदगी क्यूँ तुझसे हुई जुदा है?

सिसक रही धरती, बिलखता आसमान है,
बदली हैं हवायें, मौसम परेशान हैं,
मिटा रहा खुद को, ये कैसा इंसान है?
बदल रहा नक्शा, कहर बरप रहा है,
मेरे मौला! हम खुदगर्जों से शायद तू खफा है,
इसलिए जिंदगी अब तुझसे हुई जुदा है

नीतीश कुमार रंजन
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर–पूर्व, हुब्बल्लि

नमन

देश के वीर जवानों को,
है, मेरा शत–शत नमन
जिनके बलिदानों से
मेरे देश में है, अमन ।।

भूलकर जो अपना तन मन,
कर देते हैं, सब कुछ अर्पण,
ताकि हम आप महफूज रहें,
और खिला रहे, देश का चमन
भारत के वीर जवानों को,
है, मेरा शत–शत नमन ।।

देशभक्ति होती इनमें अपार,
देश ही होता इनका परिवार,
मातृभूमि का कर्ज चुकाने,
लेकर जन्म बार–बार
देश द्रोहियों का करते हैं, दमन।
हिंद के वीर जवानों को,
है, मेरा शत–शत नमन ।।

झुलसती गर्मियों में,
और कड़कती सर्दियों में,
पर्वतों की ऊंचाई पर
और समुद्र की गहराई में,
जल–थल और वायु में
सेवारत सभी जवानों को
है, मेरा शत–शत नमन ।।

जिनके बलिदान से
मेरे देश में है अमन ।।

कालीचरण कुमार
लगेज पोर्टर,पार्सल कार्यालय, गदग

कलम के धनी हुब्बल्लि मंडल के रेल कर्मियों उनके परिवारजनों एवं लेखकों से निवेदन

1. आपकी उत्कृष्ट रचनाओं का 'प्रतिबिंब' में स्वागत है।
2. कृपया अपनी रचनाओं की मूल प्रति ही भेजे, लेख / कविता आदि के साथ एक घोषणा पत्र भी संलग्न करें, जिसमें यह स्पष्ट किया गया हो कि मेरी यह रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है तथा इसमें दी गई सामग्री की जिम्मेदारी लेखक की है।
3. पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए लेखकों और पाठकों के पत्रों एवं सुझावों का स्वागत है।
4. रचनाएं तथा फोटो rbadiv.swr.ubl@gmail.comपर ई–मेल द्वारा भी भेज सकते हैं।
5. अधिक जानकारी के लिए राजभाषा शाखा, मंडल कार्यालय, हुब्बल्लि में संपर्क करें। (रेलवे फोन–45018, दूरभाषा 0836–2345018)

श्रद्धांजलि

सुबह के दस बज चुके थे सूरज के पिताजी अपनी छोटी–सी चाय की दुकान बंदकर नाश्ते के लिए घर वापस आ गए थे। मां सूरज को जगा–जगा कर थक चुकी थी। पिताजी ने पानी की दो–चार बुंदें सूरज के मूहं पर मारी और वह उठ बैठा। पिताजी ने गुस्सें में सूरज को दो–चार बातें सुनाया और सूरज टूटे मन से दुकान की ओर चल पड़ा। सूरज का व्यवहार दिन–ब–दिन बदलता जा रहा था। बारहवीं पास करने के बाद उसने पढ़ाई छोड़ दी थी। दिनभर दोस्तों के साथ आवारागर्दी करना, मूवी देखना उसकी आदत–सी बन गई थी। क्रिकेट का मैदान हो या फुटबॉल या फिर कबड्डी, हर जगह सूरज अच्छा खेलता था, पर कुछ न कुछ विवाद करना उसके लिए आम बात थी। गांव के लोग भी सूरज के बेकार के कामों और विवादों से परेशान होकर तंग आ चुके थे। रोज–रोज के सूरज की लड़ाई–झगड़ों और लोगों की बातें सुन–सुन कर मम्मी–पापा के कान पक चुके थे। वे सूरज को समझा–समझाकर हार गए थे, पर सूरज के कानों पर जूँ तक रेंगने का नाम नहीं ले रही थी। मम्मी–पापा दोनों सूरज से परेशान हो गए थे, पर सूरज सुधरने का नाम ही नहीं ले रहा था। हद तो, तब हो गई जब पूजा की मां चीख–चीखकर सूरज की मां को उलाहना देने लगी, वह सूरज की मां से कह रही थी कि वह अपने बेटे सूरज को सुधार ले, वरना अंजाम ठीक नहीं होगा, मां के पूछने पर उसने बताया कि चौराहें वाली दुकान पर बैठकर सूरज घंटों मेरी बेटी से बातें किया करता है। मां का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ चुका था, वह गुस्से से कांप रही थी और सूरज के आने का इंतजार कर रही थी। सूरज के आते ही मां का गुस्सा सूरज पर फूट पड़ा। वह खुद रोने लगी और सूरज को भला–बुरा कहने लगी। सूरज, मां के गुस्से को भाप गया था, मां ने कहा तू पूजा को देख कर प्यार वाले गाने गाता है, अब तू गांव की बहु–बेटियों को भी छेड़ने लगा, सूरज ने कहा, नहीं मां, ऐसा नहीं है, पूजा मुझे चाहती है और मैं भी पूजा से ..... प्यार करता हूँ मां। प्यार शब्द सुनते ही मां का शरीर गुस्से से लाल हो गया, मां ने, न आव देखा न तावं, एक ड़ंड़ा लेकर गुस्सें से सूरज को पीटना शुरु कर दिया। सूरज ने मां का कोई विरोध नहीं किया, सूरज को पीटने के बाद मां अपना सर पकड़कर जोर–जोर से रोने लगी। मां ने कहा अब हम पूरी तरह से ऊब चुके हैं। तुझसे अब, हम तेरे साथ रहना तक नहीं चाहते, अगर तू और हमारे साथ रहा तो हम अपनी जान दे देगें। अच्छा है, तू हमें छोड़कर कहीं और चला जा, हमें शान्ति से रहने तो दे, तेरे कारनामों से हम इज्जत से जी तो न सके, पर हम इस बुढ़ापे में इज्जत से मरना चाहते है। तू यहां से न गया तो, हम अपने प्राण त्याग देंगे। सूरज मां की बाते सुन रहा था, वह अब भी चुप–चाप बैठा था, मां ने फिर कहा, जा चल जा यहां से और तुझ में अगर जरा–सा भी गौरव बाकी है तो, जिन्दा मुँह मत दिखाना मुझे, मैं तेरा मरा मुंह देखना चाहती हूँ और अगर तुझ में जरा सी भी शर्म बाकी है तो जिन्दा लौटकर मत आना मेरे पास। मां जोर–जोर से कह रही थी। सूरज तेरा ये शरीर किसी काम का नहीं, तेरा ये शरीर किसी काम का नहीं। सूरज को किसी का डर नहीं था। न गांव के किसी आदमी से कोई गिला पर मां की नफरत भरी बातों ने सूरज के कोमल मन को झकझोर कर रख दिया था। सूरज सोच रहा था जन्म देने वाली मां भी क्या अपने बच्चे से इतना कठोर हो सकती है।

मां के शब्द सूरज की अंतर–आत्मा को किसी शिकारी के तीक्ष्ण बाण की तरह उसके शरीर को बेधकर उसके ह्दय को छलनी कर चुके थे। उसके मन में तरह–तरह के विचार जन्म ले रहे थे। सूरज बिना कुछ खाए–पिये रात भर मां के द्वारा कहें शब्दों को सोचता और रोता रहा। आखिरकार उसने अपने आवश्यक कागजात लिये और सोते हुए माता–पिता के चुपके से पांव छूए और रात के अंधेरे में कहीं गुम हो गया। उस गांव में सुबह का सूरज आसमान से तो निकला, पर उस गांव का सूरज उस गांव में नहीं था। क्योंकि सूरज उस गांव को छोड़कर उस गांव से दूर कहीं दूर बहुत दूर जा चूका था। अपनी नई मंजिल की तलाश में सूरज के पास न कोई मंजिल थी न कोई रास्ता, पर ह्दय में एक दर्द था जो एक कशिश बनके उसे न जाने कहा लिये जा रही थी। सूरज के चले जाने से किसी को कोई तकलीफ नहीं हुई।

किसी ने उसकी सुध तक नहीं ली। पर पूजा अपने मन की व्यथा किसी से कह नहीं सकती थी। दो साल बीत गए, किसी को मालूम नहीं कि सूरज कहां है। यहां तक कि जैसे मां ने भी सूरज को भुला दिया हो। एक दिन पूजा ने मां से ड़रते–ड़रते पूछ लिया। मां सूरज का कुछ पता चला, सूरज की मां ने कहा मुझे नहीं मालुम कि वह कहां है, हां एक साल पहले एक पत्र लेकर कुछ लोग सूरज का पता पूछते–पूछते मेरे पास आए थे और कह रहे थे कि वह फौज में भर्ती हो गया है, पर मुझे कुछ विश्वास नहीं हुआ। इसके सिवाय कुछ मालूम नहीं। गांव के सभी लोग भूल चुके थे सूरज को। तभी किसी ने कहां मां आज टी.वी. में समाचार प्रसारित हो रहा था, जिसमें हमारे देश के जांबाज सैनिकों ने विदेशी दुश्मन सैनिकों के, जो आतंकवादियों से मिले हुए थे, जिन्होंने धोखे से हमारे देश की सरहद पारकर हमारे देश के एक भू–भाग पर कब्जा कर लिया था, उन दुश्मन सैनिकों के कई ठिकानों को हमारे सैनिकों ने नस्तनाबूद कर दिया और अपना भू–भाग वापस ले लिया। इस ऑपरेशन में (मिशन में) दुश्मन के बहुत से आतंकवादी और सैनिक मारे गए। पर इस मिशन में, हमारे देश की रक्षा करने वाले कुछ सैनिक भी शहीद हो गए। मां सभी नामों में से एक नाम किसी मेजर सूरज सिंह का भी है, फोटो तो बिलकुल हमारे सूरज से मिलती–जुलती है मां, पर मां को विश्वास न हुआ, सुबह होते ही अखबारों के पन्नों पर सैनिकों की वीरता के किस्से और शहीद सैनिकों के पते और फोटो प्रकाशित हुए जिसमें शहीद मेजर सूरज सिंह का नाम सबसे ऊपर था। थोड़ी देर में सेना की गाड़ी आ गई। जिसमें जवानों के साथ मेजर सूरज सिंह का पार्थिव शरीर था। जी हां, सूरज देश के

लिए शहीद हो चूका था। यह खबर थोड़ी देर में गांव में जंगल की आग की तरह फैल चुकी थी। हर कोई सूरज के बारे में पूछ रहा था। सूरज के किस्से हर किसी के जुबान पर थे। सूरज पल भर में गांव के लोगों की आंखों का तारा बन चुका था। उससे नफरत करनेवाले लोग भी उसके लिए आँसू बहा रहे थे। मां का रो–रो कर बुरा हाल था। सभी को सूरज पर नाज था। क्यों न हो उनकें गांव के किसी लाल ने उनका सिर गर्व से ऊंचा कर दिया था। गांव के लोगों की आंखों में आँसू जरुर था, पर उनका सीना फक्र से फूला हुआ था, कि उनके गांव के सपूत ने गांव के साथ–साथ देश का नाम भी रोशन कर दिया था। उन सभी के बहते हुए आँसू सूरज के लिए हृदय से श्रद्धांजलि थी। पूजा अपने आसूंओं को नहीं रोक पा रही थी। वह कहीं न कहीं अपने आपको भी सूरज की मौत का जिम्मेदार मान रही थी, पर उसे नाज़ था कि उस पर जान देने वाले किसी वीर ने देश के लिए जान दे दी। पूजा ने सूरज के ताबूत को छुआ और सिन्दूर की तरह उसे अपनी मांग में सजा लिया। गांव के चौराहे का नाम मेजर शहीद सूरज सिंह कर दिया गया। चौराहे पर सूरज की प्रस्तावित प्रतिमा जब लगेगी तो सूरज के शहीद होने के साथ–साथ सूरज और पूजा की प्यार की दास्तां भी ब्यान करेगी। जहां सूरज और पूजा बैठकर दुनिया से बेखबर घंटों बाते किया करते थे। सेना के जवानों ने सूरज को भाव–भीन बिदाई दी। गांव के सभी लोग सूरज को सैलूट कर सूरज अमर रहें। के नारे लगा रहे थे शाम का धुंधला अंधेरा सूरज की किरणों को अंधेरे में छुपा लेना चाहती थी। पर सूरज की किरणों की लौ और तेज होने की कोशिश कर रही थी। किसी मां के कलेजे का सूरज अस्त हो चूका था पर उसने अपने प्रकाश से संपूर्ण देश को औलौकिक कर दिया था। आज इस गांव में दर्द की दीवाली थी जिसका हर एक दीपक लोगों को देश के प्रति सम्मान और मर–मिटने की प्रेरणा दे रहा था। तिरगें में लिपटे सूरज के ताबूत पर रखी सूरज की मुस्कराती हुई तस्वीर मां के आंसुओं से यही कह रही थी, रो मत मां आपको तो खुश होना चाहिए। क्योंकि मैंने आपकी हर बात सचकर दी मां, मां आपने यह कहा था न, जिन्दा लौटकर मत आना, मैंने आपकी बात मान ली मां, आपने ये भी कहा था, जीते जी मुझे अपना मुंह मत दिखाना, मैंने आपकी यह बात भी मान ली मां, पर आपको, आपके आंसुओं की कसम मां, मुझे माफ करना, क्योंकि मैंने आपकी एक बात गलत साबित कर दी जिसमें आपने कहा था, सूरज तेरा ये शरीर किसी काम का नहीं, तेरा ये शरीर किसी काम का नहीं...

..

श्याम सुन्दर
मुख्य वाणिज्य लिपिक, वास्को–द–गामा

फिर क्यों करता चिन्ता हे मन

परिवर्तन शाश्वत नियम प्रकृति का
वो तो अवश्य सम्भावी है
फिर क्यों करता चिन्ता हे मन!
कुछ भी नहीं स्थायी है
निशा भयावह लम्बी क्यों न हो
अन्त तो उसका सुनिश्चित है
दिवस की बारी आती फिर है
करता सूर्य आलोकित है
अंधकार का अंत है होता
देता सबको दिखलाई है
फिर क्यों करता चिन्ता हे मन!
कुछ भी नहीं स्थायी है
हार न हिम्मत, हे बन्दे! तू
धैर्य को जरा कर धारण
इतिहास में भरे पड़े हैं
कितने ही देखो उदाहरण
राई बना पर्वत पल में
और बना पर्वत राई है
फिर क्यों करता चिन्ता हे मन!
कुछ भी नहीं स्थायी है
कलाम ने बेचा अखबार कभी
अंततः राष्ट्रपति ये बने
वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी
कभी थे वो चाय बेचते
मामूली थे ये लोग कभी
पर, प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा पाई है
फिर क्यों करता चिन्ता हे मन!
कुछ भी नहीं स्थायी हैं

महामूरख था कालीदास कभी
सरस्वती पुत्र था कहलाया
महाकामी था तुलसीदास कभी
और रामचरितमानस रच डाला
काव्य–लेखन क्षेत्र में, दोनों ने
पारंगतता पाई है
फिर क्यों करता चिन्ता है मन!
कुछ भी नहीं स्थायी है
कैंसर से पीड़ित था युवराज
फिर भी क्रिकेट में नाम कमाया
स्टेफी ग्राफ को मारी गई थी चाकू
फिर भी टेनिस में परचम लहराया
लड़कर मौत से, दोनों ने
सफलतायें पाई हैं,
फिर क्यों करता चिन्ता हे मन!
कुछ भी नहीं स्थायी है
जहां था टेथिस सागर कहीं
वहा हिमालय है खड़ा
द्वारिका पूरा का पूरा
सागर में है डूबा पड़ा
प्रकृति ने इशारे इशारे में
बड़ी बात समझाई है
फिर क्यों करता चिन्ता हे मन!
कुछ भी नहीं स्थायी है

विशाल कुमार जयसवाल
सेक्शन नियंत्रक, हुब्बल्लि

हे! प्रिय पाहुन

हे! प्रिय पाहुन
करता हूँ स्वागतम।
ये पत्र–पुष्प जो भी
तुझको हैं अर्पण।।
हे! प्रिय पाहुन.३.।

है मेरा भाग्य
परम् सौभग्य।
आप किए हैं
मेरे द्वार पदार्पण।।

है! प्रिय पाहुन....।।
आज हुआ मेरा
घर धन–धान्य।
पुल्कित मन बस
सब करता समर्पण।।

हे! प्रिय पाहुन....।
न कोई आसान
न कोई वासन।
सेवा में अपने
सरल शब्द समर्पण।।

है! प्रिय पाहुन....।।
आपके चरण रज
पाए हैं गरीब जन।
प्रमुदित हर्षित हुए
यह धारा के कण–कण।।
हे!प्रिय पाहुन....।।

निरंजन के. झा
वरिष्ठ माल गार्ड /कैसलरॉक

ಭಾವಸ್ಪಂದನೆ

ನವ ವಸಂತ ಮಾಸದಿ
ಮಧುರ ಕ್ಷಣದಿ ಉದಿಸಿ
ತಂಪು ಗಾಳಿಯೊಡನೆ ಬೆರೆತು
ಬಂದು ಸೇರಿತು ಅಂತರಂಗದಿ

ಮಧುರತೆಯ ಮೆರಗು
ತುಂಬಿ ತುಳುಕಿ
ಬಂತು ಸ್ಪರ್ಶ ಭಾವವು
ಕಾದು ಕುಳಿತ ಹೃದಯದಿ

ತನಗೆ ತಾನು ಸೋಲಲು
ನವ ನವೀನ ಭಾವ ಫಲಿಸಲು
ಪ್ರೀತಿ ಹಣತೆ ಬೆಳಗಿ
ಹೃದಯ ತುಂಬಿ ಹೊಳೆಯಿತು

ಅಂತರಾತ್ಮ ನುಡಿಯಿತು
ಇದುವೇ ಎನ್ನ ಪಾಲಿನ
ಭಾವ ಭಾವಗಳ ನಡುವಿನ
ಭಾವ ಸ್ಪಂದನವೆಂದಿತು

ಮಹೇಶ್ ಶ್ರೀ ತಳವಾರ್
ಹೆಲ್ಪರ್, ವಸೆಇಂಜೀ ಕಾರ್ಯ, ಗದಗ

"सक्षम परियोजना"

रेलवे द्वारा अपने कर्मचारियों की उत्पादकता और कार्य कौशल में सुधार के लिए सक्षम परियोजना का आरंभ किया गया है। इस परियोजना का आरंभ जनवरी 2018 से हुआ है और इसके सितंबर 2018 तक पूरे होने का लक्ष्य रखा गया है।

मुख्य विशेषताएँ :

- इसमें कर्मचारियों की उत्पादकता और कार्य कौशल में सुधार और विकास करने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाएगा।
- इस परियोजना के अंतर्गत रेलवे के उच्चतम प्रबंधन से लेकर निचले स्तर के कर्मचारी तक, प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी और श्रमिक को प्रशिक्षण में भाग लेना अनिवार्य है।
- परियोजना में प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम कर्मचारी के कार्य की प्रकृति के अनुसार निर्मित किया जाएगा। इसके अंतर्गत विश्व के समकक्ष कर्मचारी और अधिकारियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली तकनीक को सिखाने से लेकर नयी तकनीक का प्रशिक्षण तक शामिल किया जाएगा।
- यह प्रशिक्षण या तो कर्मचारियों को उनके कार्य स्थल पर काम के दौरान पाँच दिन की अवधि में दिया जाएगा या विशेष रूप से रेलवे प्रशिक्षण केन्द्रों पर उपलब्ध करवाया जाएगा।
- रेलवे के सभी अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दे दिये गए हैं की 31-12-2017 तक वे अपने संबन्धित क्षेत्रों के अधिकारियों, कर्मचारियों व सभी मानव कर्मिकों की प्रशिक्षण आवश्यकताएँ चिन्हीत कर लें। इसके बाद इन सभी को छोटे–छोटे समूहों में बाँट कर पूरे प्रशिक्षण की व्यवस्था की सूचना केन्द्रीय रेलवे मंत्रालय को 31 दिसंबर तक दे दें।
- मंत्रालय की ओर से प्रबंधकों को यह निर्देश दिया जा चुका है कि वो इस परियोजना में प्रशिक्षित कला–कौशल का समुचित उपयोग करना भी सुनिश्चित करें।
- इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य रेलवे के मानव संसाधन को नवीनतम तकनीक और प्रणाली से अवगत करवाना है। इसके द्वारा उनकी उत्पादकता और कार्य क्षमता में सरलता से सुधार और विकास हो सके ताकि बेहतर सेवा और सुविधओं के लिए यात्रियो की बढती अपेक्षाएँ पूरी की जा सके !

राजभाषा की गतिविधियां

बेलगावि स्टेशन में शील्ड व ट्रॉफी का वितरण

स्टेशन प्रबंधक कार्यालय, बेलगावि–प्रथम स्थान

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर, विद्युत कार्यालय, बेलगावि–द्वितीय स्थान

63वां रेल सप्ताह

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजेश मोहन नें दिनांक 21–04–2018 को चालुक्या इन्सिट्यूट में मंडल की ओर से आयोजित 63वें रेल सप्ताह समारोह का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि वर्ष 2017–18 में हुब्बल्लि मंडल ने 35.4 मिलियन टन माल का परिवहन किया है। इस प्रकार हुब्बल्लि मंडल ने भारतीय रेलवे के 68मंडलों में 8 वां स्थान प्राप्त किया है। इस अवसर पर वर्ष 2017–18 के दौरान बेहतरीन सेवा देने वाले हुब्बल्लि मंडल के 134 रेल कर्मचारियों को नकद पुरस्कार सहित प्रमाण पत्र तथा सर्वश्रेष्ठ स्टेशन, सर्वश्रेष्ठ कार्यालय, सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य यूनिट जैसे 13 अन्य पुरस्कार वितरित किये। इस समारोह में रेलवे हाई स्कूल के विद्यार्थियों तथा स्काउट एवं गाईड के स्वयं सेवकों द्वारा रंगारंग सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

मंडल की धरोहर

महादेव मंदिर, इटगि

इटगि कर्नाटक में कोप्पल जिले के यालबुर्गा ताल्लुक में स्थित एक ग्राम है। यह कुकनूर से 7 कि.मी एवं लक्कुंडी से 20 कि.मी दूर है। इटगि चालुक्य शैली के महादेव मंदिर के लिये प्रसिद्ध है। यह उत्तरी कर्नाटक के सबसे सुंदर एवं बड़े पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित है। यह विश्वकर्मा ब्राह्मण स्थापत्य के मंदिर शिल्पकला के अद्भुत उदाहरणों में से एक है।

इटगी में महादेव मंदिर को पश्चिमी चालुक्य राजा विक्रमादित्य–VI के सेना के एक कमांडर (दंडानायक) महादेव द्वारा लगभग 1112 सीई में बनाया गया था। इटागि हुब्बल्लि से 85 किमी और हम्पी से 64 किमी पर है। यह मंदिर हिंदू भगवान शिव को समर्पित है। बेहतरीन निष्पादित मूर्तियां, दीवारों, स्तंभों और मीनारों पर बारीकी से तैयार की गई नक्काशी इसे पूर्ण पश्चिमी चालुक्य कला का एक अच्छा उदाहरण बनाती है जो चालुक्य कारीगरों की प्रतिभा को दर्शाती है। मंदिर में 1112 सीई में बनी एक शिलालेख के अनुसार इसे मंदिरों में सम्राट (देवलय चक्रवर्ती) कहते हैं। कला इतिहासकार हेनरी कौसेन ने इस स्मारक को हलेबिडु के बाद कन्नड़ देश में बेहतरीन कहा। महादेव मंदिर आधिकारिक तौर पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा राष्ट्रीय स्मारक के रूप में संरक्षित है।

हुब्बल्लि मंडल की गतिविधियां

मंडल पर विशेष स्वच्छता अभियान

हुब्बल्लि स्टेशन

वास्को स्टेशन

डॉ. अंबेडकर जयंती

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस. दपरेमकसं, हुब्बल्लि मंडल

अर्थ अवर

प्लेटफार्म पर रेकों का रिवर्सल तथा स्टैबलिंग पर जागरूकता कार्यक्रम

पुनर्निर्मित रेलवे टेनिस कोर्ट का उद्घाटन

रेलवे सुरक्षा आयुक्त का निरीक्षण

राजभाषा की गतिविधियां

हिंदी कार्यशाला - गदग स्टेशन

बल्लारि स्टेशन

आशुभाषण प्रतियोगिता

सीडीओ.हुब्बल्लि

बेलगावि स्टेशन

राजभाषा प्रश्नोत्तरी

होसपेटे स्टेशन

विजयपुर स्टेशन

राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी

हुब्बल्लि स्टेशन

संपादक मंडल

संरक्षक
श्री राजेश मोहन
मंडल रेल प्रबंधक, हुब्बल्लि

मुख्य संपादक
श्री आर. सी. पुनेठा
अपर मंडल रेल प्रबंधक

संपादक
श्री सचिन रा. जैन
राजभाषा अधिकारी

सह संपादक
श्री विजयकुमार लांडे
वरिष्ठ अनुवादक